1 पर्वत कहता

पाठ के उद्देश्य

- प्रकृति का महत्व समझाना
- प्रकृति के अंगों से सीख देना
- जीवन जीने का सही तरीका बताना
- पर्यायवाची शब्दों की जानकारी देना
- 'कर' और 'आई' लगाकर बने शब्दों की जानकारी देना

समझ आपकी...

(More In-Depth Learning)

नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। एक ओर प्रकृति के कुछ उपादानों के नाम और चित्र हैं तथा दूसरी ओर उनसे मिलने वाली सीख है। इन्हें समझिए और मिलाइए–

स्तंभ-क		स्तंभ-ख
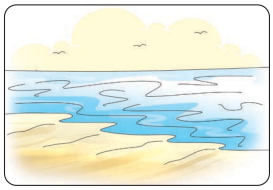	सागर	• संसार पर छा जाना
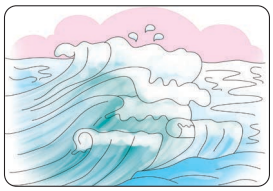	लहरें	• सहनशीलता
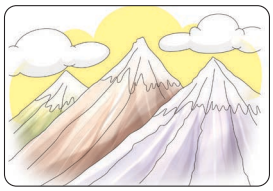	पर्वत	• उत्साह
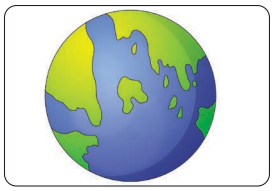	पृथ्वी	• ऊँचा बनना
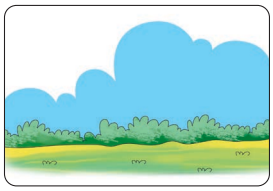	नभ	• गहराई समझना

चर्चा-बिंदु प्रकृति से मिलने वाली कोई अन्य सीख बताइए।

चलें पाठ की ओर

हमारा शरीर प्रकृति के पाँच तत्वों से मिलकर बना है। इस प्रकार हम भी प्रकृति से ही उपजे हुए प्रकृति के अंग हैं, यह कविता हमें उसी प्रकृति से मिलने वाली सीख को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दे रही है। प्रकृति हमको जो देती है, उसको ग्रहण करने के लिए हमें उसको बहुत करीब से जानना होगा। आइए, कविता को पढ़कर समझते हैं।

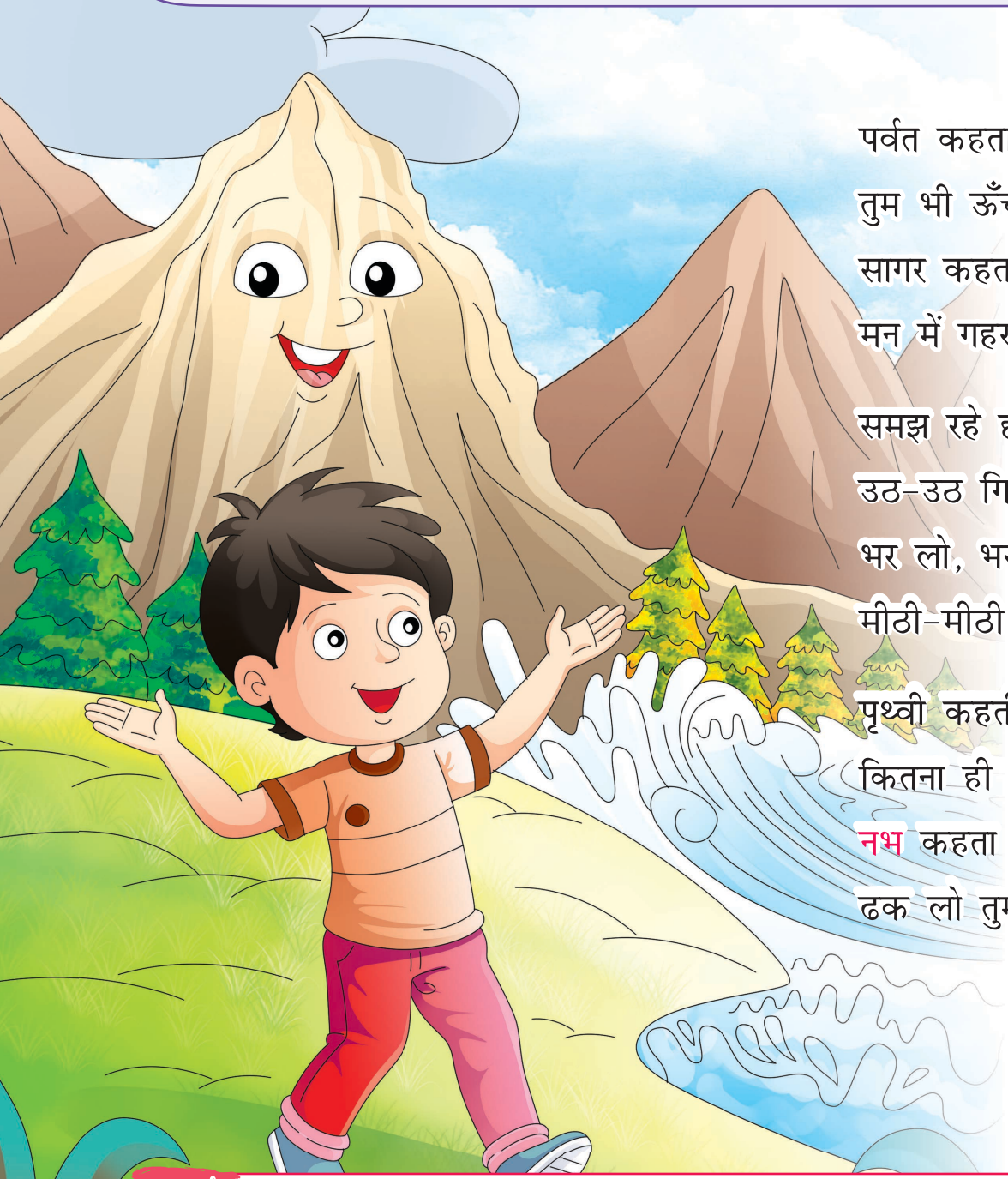

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती हैं,
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने दिल में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग!

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार!

–अविनाश झा 'वत्स'

शब्दार्थ **शीश**– माथा, मस्तक **लहराकर**– घूमकर, मचलकर मृदुल– कोमल, मुलायम
उमंग– उत्साह, **धैर्य**– सब्र, सहनशीलता **नभ**– आकाश

प्रासंगिकता

वर्तमान समय में छात्रों में आत्मविश्वास भरने और उन्हें कठिन-से-कठिन परिस्थिति का सामना करने हेतु यह कविता प्रासंगिक सिद्ध होती है।

पुनरावृत्ति

- पर्वत से हम स्वाभिमान और महान बनना सीखते हैं।
- सागर मन में गहराई लाने की बात कहता है।
- पृथ्वी हमें कठिन समय में धैर्य बनाए रखना सिखाती है।
- नभ कहता है कि इतने बड़े हो जाओ कि तुम्हारी कीर्ति संसार में छा जाए।
- तरंग दिल में मीठी उमंग भरने की बात कहती है।
- प्रकृति से बड़ा ज्ञान हमें कोई नहीं दे सकता।

अभ्यास की ओर

सुनिए और बोलिए

Listening and Speaking Skills

शीश, उमंग, मृदुल, तरंग, धैर्य, पृथ्वी, गहराई

बोलिए और बताइए

- नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए–

Application & Knowledge

(क) नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और उसके बारे में बताइए–

(ख) क्या आपने कभी समुद्र देखा है? समुद्र की लहरें देखकर कैसा लगता है?

(ग) विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता है?

(घ) प्रकृति के निकट रहने का हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

लिखिए और बताइए

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के लिए उचित विकल्प चुनिए– Evaluation

(क) पर्वत हमें क्या संदेश देता है?

(i) मन में गहराई लाने का ☐

(ii) स्वाभिमानी और महान बनने का ☐

(iii) मीठा बोलने का ☐

(ख) तरंग क्या भरने के लिए कहती है?

(i) पानी ☐ (ii) हवा ☐

(iii) उमंग ☐

2. सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाइए– Knowledge

(क) सागर हमें शीश उठाकर चलने को कहता है। ☐

(ख) पृथ्वी हमें धैर्य न छोड़ने के लिए कहती है। ☐

(ग) तरंग कहती है, लहराकर मन में गहराई लाओ। ☐

3. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को सही शब्द लिखकर पूरा कीजिए– Understanding

(क) पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी ..... बन जाओ।

(ख) पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो, कितना ही हो ..... पर भार।

(ग) भर लो, भर लो अपने ..... में, मीठी-मीठी ..... उमंग!

(घ) समझ रहे हो क्या कहती हैं, उठ-उठ गिर-गिर ..... तरंग।

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– Understanding

(क) संसार को ढक लेने की सीख कौन दे रहा है?

.....

(ख) दिल में मीठी मृदुल उमंग भरने के लिए कौन कह रहा है?

.....

(ग) धैर्य न छोड़ने की बात कौन कह रहा है?

.....

(घ) पर्वत, सागर, पृथ्वी तथा नभ हमें क्या-क्या सीख देते हैं?

.....

.....

(ङ) प्रकृति से हमें निरंतर क्या सीख देती रहती है?

.....

.....

समझिए और बताइए

- निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए– Undrstanding

(क) "सागर कहता लहराकर
मन में गहराई लाओ"

.....

.....

.....

(ख) "भर लो भर लो अपने दिल में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग!"

.....

.....

.....

सोचिए और बताइए

Critical Thinking

- कविता में कहा गया है– 'पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो।' सोचिए और बताइए कि ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ होती होंगी; जब मनुष्य का धैर्य उसका साथ छोड़ने लगता है?
- सोचिए और बताइए कि किन कार्यों से व्यक्ति का सिर सदैव ऊँचा रहता है?

भाषा और व्याकरण से

Analysis & Application

1. कविता में आए शब्द 'शीश' और 'सिर' पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण हैं। इन्हें समान अर्थ वाले शब्द भी कहा जाता है।

   नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

   (क) पर्वत – ....

   (ख) नभ – ....

   (ग) सागर – ....

   (घ) पृथ्वी – ....

2. भाषा में कई बार दो शब्दों को जोड़कर एक नया शब्द बनाया जाता है।

   पढ़िए, समझिए और लिखिए–

   उठा + कर = उठाकर

   समझा + कर = ...

   लहरा + कर = ...

   गहरा + आई = गहराई

   शरम + आई = ...

   लहर + आई = ...

कुछ गपशप, कुछ काम

(विषय संवर्धक गतिविधियाँ)

मेरी कल्पना

Experiential Learning

- कल्पना कीजिए, आप किसी पर्वतारोही से मिलते हैं, तो आप उनसे पर्वतों से संबंधित कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे?

- कल्पना कीजिए कि आपको स्काई डाइविंग या स्कूबा डाइविंग में से किसी एक को करने का मौका मिले, तो आप कौन-सी डाइविंग करना पसंद करेंगे और क्यों?
- यदि आप किसी 'हिल स्टेशन' पर जाएँ, जहाँ पहाड़ों का दृश्य दिखता है, तो आप क्या करेंगे?
  - उस पहाड़ पर चढ़कर चारों ओर देखना चाहेंगे। ☐
  - उसके सुंदर दृश्य का चित्र बनाएँगे या फोटो लेना चाहेंगे। ☐
  - उसकी सुंदरता पर कोई कविता लिखना पसंद करेंगे। ☐

हमारी बातचीत

Discussion Based Learning

- गरमी की छुट्टियाँ खत्म होने के बाद पहले दिन सभी बच्चे अपने भ्रमण व गतिविधियों की चर्चा कर रहे हैं। आप अपने किस अनुभव को साझा करेंगे? उसके बारे में बताइए।

मेरी रचनात्मकता

Creativity & Experiential Learning

- आपके विद्यालय में वार्षिक चित्रकला प्रतियोगिता हुई थी, जिसमें आप जीत गए। प्रतियोगिता में आपने प्रकृति और पर्यावरण से संबंधी चित्र बनाए थे। उन्हें बनाने के पीछे आपके क्या विचार थे तथा जीतकर आपको कैसा लगा, अपने अनुभव को तीन-चार वाक्यों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- विद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में प्रकृति के विभिन्न अंगों को दर्शाती हुई एक चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन कीजिए और भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं रंगों से प्रकृति का चित्रण करते चित्र बनाइए।

हमारे पर्वत-पहाड़

1. नीचे वर्ग-पहेली में पाँच पहाड़ों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखिए– Observation Skill

मा	हि	हिं	नं	प
उ	मा	द	दा	अ
नी	ल	गि	री	रा
ल	य	कं	श	व
वि	ध्यां	च	ल	ली
ए	शि	न	अ	खा
व	ख	जं	र	ड़ी
रा	सा	घा	ब	ग

....

....

....

मनोरंजक गतिविधियाँ

Fun Activity Based Learning

- कक्षा में एक नुक्कड़ नाटिका खेलिए, जिसमें छात्र प्रकृति का अंग यानी हवा, बादल, धरती, पर्वत, आसमान, पानी, पेड़ का मुखौटा लगाकर अपने-अपने पात्र के अनुसार अपने बारे में बोलेंगे और अपनी उपयोगिता बताएँगे।

2 झील के किनारे

पाठ के उद्देश्य

- साथ रहने के महत्व को बताना
- एक-दूसरे की मदद करना सिखाना
- विशेषण (कौन, कैसा था), सर्वनाम व मुहावरों के बारे में जानकारी देना

समझ आपकी...

(Integrated Learning)

- 'बंदर' शब्द सुनकर आपके मन में इससे संबंधित जो भी शब्द आते हैं, उनमें से किन्हीं तीन शब्दों को नीचे दिए गए गोले में लिखिए–

केला ....

बंदर के शरीर के अंगों के नाम लिखते हुए उसकी विशेषता भी बताइए, जैसे–

पूँछ – लंबी

..... – .....

..... – .....

..... – .....

..... – .....

..... – .....

..... – .....

चर्चा-बिंदु प्रकृति से सीखकर आपको कैसा लगा? दो वाक्यों में बताइए।

चलें पाठ की ओर

क्या आपने कभी सोचा है, यदि हमारे सुख-दुख में हमारा परिवार, मित्र, पड़ोसी या अन्य कोई हमारे साथ न हो, तो हमें कैसा लगेगा? समय-समय पर हमें लोगों के साथ की आवश्यकता क्यों होती है? साथ रहने के क्या लाभ हैं? इस पाठ में हम एक बंदर के बारे पढ़ेंगे, जो अन्य जानवरों तथा पक्षियों के साथ रहने से परेशान है और अकेला रहना चाहता है। इसके लिए वह क्या-क्या करता है? क्या वह अकेला रह पता है? क्या उसे कोई सीख मिलती है? आइए, पाठ पढ़कर जानते हैं।

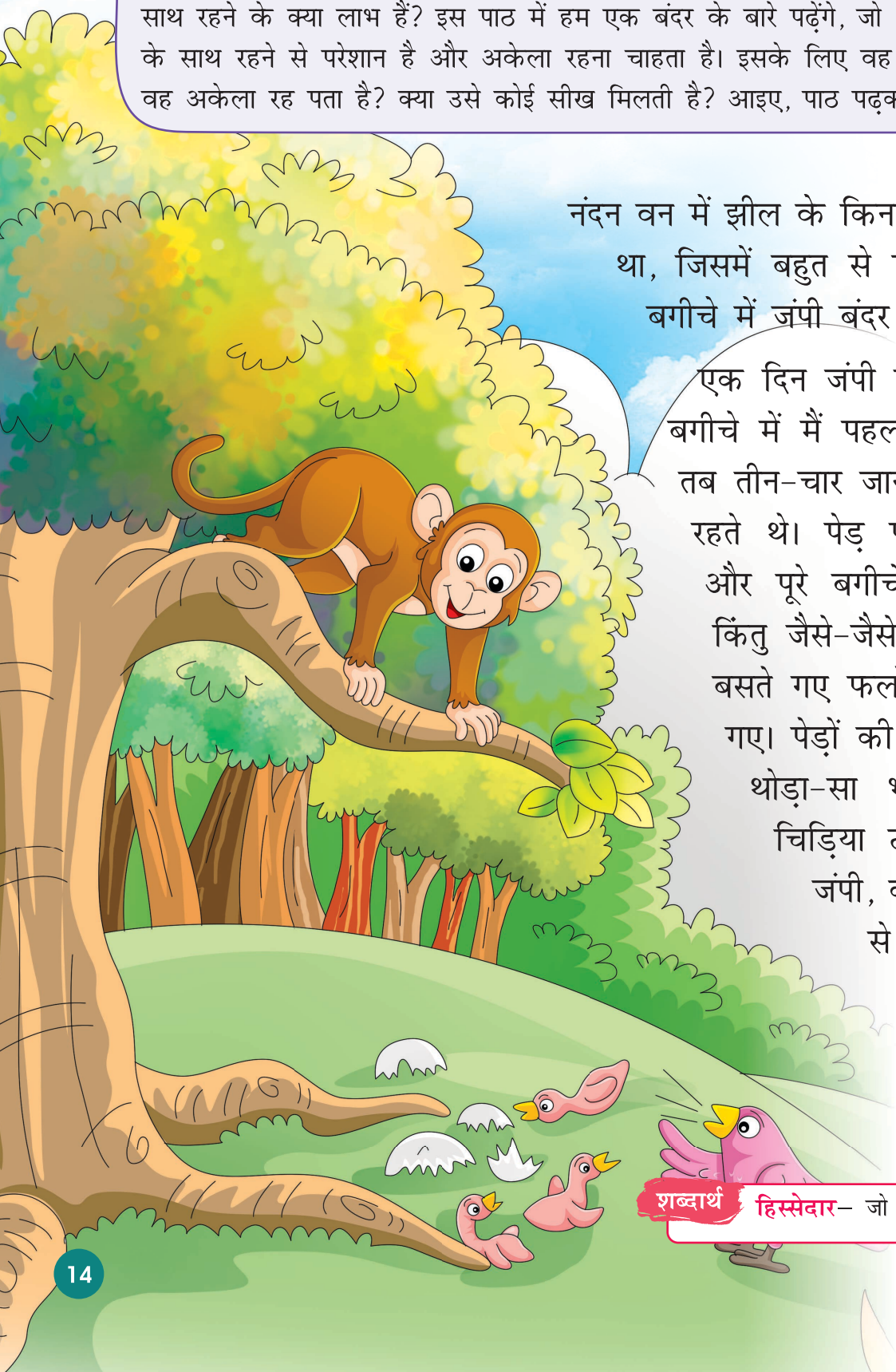

नंदन वन में झील के किनारे एक हरा-भरा बगीचा था, जिसमें बहुत से फलों के पेड़ थे। इसी बगीचे में जंपी बंदर का घर था।

एक दिन जंपी सोचने लगा, "जब इस बगीचे में मैं पहली बार रहने आया था। तब तीन-चार जानवर और पक्षी ही यहाँ रहते थे। पेड़ फलों से लदे रहते थे और पूरे बगीचे पर अपना राज था, किंतु जैसे-जैसे पशु-पक्षी यहाँ आकर बसते गए फलों के हिस्सेदार भी बढ़ गए। पेड़ों की डालियों पर झूलते हुए थोड़ा-सा भी ऊँचा झूलो, चिनी चिड़िया टोकने लगती है, "अरे जंपी, क्या कर रहे हो? घोंसले से मेरे बच्चे गिर जाएँगे।"

शब्दार्थ **हिस्सेदार**– जो हिस्सा पाने का अधिकारी हो

रात में छत पर बैठकर रेडियो सुनो, सोनू-मोनू खरगोश चिल्लाते हैं, "जंपी भइया, रेडियो धीरे करो। हमें पढ़ना है।"

पहले रानी मधुमक्खी से कटोरा भर शहद माँगकर वह खाता था, किंतु अब ऐसा कहाँ था? अब तो रौनी भालू शोर मचाकर बोलने लगता है, "तुम तो आम, अमरूद, केला सभी फल खा लेते हो, मुझे तो शहद ही सबसे प्रिय है इसलिए ज़्यादा शहद मुझे ही मिलना चाहिए।"

"नहीं अब मैं इतने बंधन सहन नहीं करूँगा सब जानवरों को बगीचे से भगा दूँगा, फिर आराम से अकेला रहूँगा" – जंपी बड़बड़ाया।

अब जंपी ने जानवरों का लिहाज करना छोड़ दिया। वह नित नई-नई शरारतों से जानवरों को परेशान करने लगा। आम के पेड़ की डाली पर खूब तेज़ झूला झूलता, चिनी चिड़िया लाख मना करती, किंतु उसके कानों पर जूँ नहीं रेंगती थी।

एक दिन तो हद ही हो गई। हुआ यूँ कि चिनी चिड़िया के सिर में तेज़ दर्द था। वह दवा लेने डॉक्टर हाथी के घर गई हुई थी। वापस लौटने पर उसने देखा, घोसला पेड़ के नीचे गिरा पड़ा था और उसके बच्चे बुरी तरह रो रहे थे। पेड़ से गिरने के कारण दोनों को काफ़ी चोट आई थी।

अब तो चिनी ने बगीचा छोड़कर जाने में ही अपनी भलाई समझी। जंपी के कारण सोनू और मोनू खरगोश पढ़ाई में फेल हो गए, तो वे भी वहाँ से चले गए।

उनके जाने से पिंकी लोमड़ी, हीरामन तोते और रौनी भालू को बहुत दुख हुआ और नाराज़ होकर उन्होंने भी बगीचा छोड़ दिया।

जंपी बंदर अब बहुत खुश था। पूरे बगीचे पर अब उसका राज था।

पर यह क्या? अभी दो ही दिन बीते थे कि जंपी का मन उदास होने लगा। उसे जानवरों की याद सताने लगी। बोरियत दूर करने के लिए वह आम के पेड़ पर झूला झूलने गया, किंतु चिनी चिड़िया की आवाज़ सुनने को वह बेचैन हो उठा। झूला छोड़ वह अपने घर आ गया और रेडियो पर गाने चला दिए, किंतु उसमें भी मन नहीं लगा। सोनू-मोनू खरगोश को याद करके उसकी आँखों में आँसू आ गए।

शब्दार्थ **लिहाज**– आदर/सम्मान **सताना**– परेशान करना **बेचैन**– व्याकुल

उसने स्वयं ही अपनों को दूर कर दिया था। दुख के कारण जंपी को तेज़ बुखार हो गया, किंतु आज उसकी देखभाल करने वाला कोई न था। जंपी अपने किए पर बेहद पछता रहा था।

अगले दिन उसकी तबियत और ज़्यादा बिगड़ गई। तेज़ बुखार के कारण वह बेहोश हो गया। जब उसे होश आया, तो हैरान रह गया चिनी चिड़िया उसके पास बैठी हुई थी।

तभी सोनू और मोनू खरगोश, डॉक्टर हाथी को बुला लाए। डॉक्टर हाथी ने उसे इंजैक्शन लगाकर कहा, "जंपी को बहुत देखभाल की ज़रूरत है। तुम लोग इसे अकेला बिलकुल मत छोड़ना।"

"आप चिंता मत कीजिए डॉक्टर साहब हम सब जंपी के साथ हैं।"–पिंकी लोमड़ी बोली। जंपी बेहद शर्मिंदा था। वह बोला, "तुम लोग यहाँ कैसे आ गए?"

शब्दार्थ शर्मिंदा– लजाना

चिनी ने कहा, "दो दिन से तुम बगीचे में दिखाई नहीं दिए, तो हम सबको तुम्हारी चिंता हो गई तुम्हारे घर में झाँककर देखा, तो तुम्हें बीमार पाया। फिर हम सब तुम्हारे पास चले आए।"

अपने लिए जानवरों का प्यार देखकर जंपी की आँखों से आँसू बहने लगे। वह बोला, "मुझे माफ़ कर दो दोस्तो, मैं अपने किए पर बेहद शर्मिंदा हूँ। मैं स्वार्थी हो गया था। आज मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि अकेले रहने में कोई सुख नहीं, सच्चा सुख तो एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने में है।"

-रेनू मंडल

प्रासंगिकता

कभी-कभी हम भूल जाते हैं कि हमारे परिवार, मित्र, पड़ोसी आदि हमारे लिए कितना महत्व रखते हैं। किसी के साथ होने से किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना करना आसान हो जाता है। छोटी-बड़ी खुशियों में किसी के साथ होने से एक अलग ही आनंद आता है। साथ रहने से पारिवारिक और सामाजिक संबंध मज़बूत होते हैं। एक साथ समय बिताने से समझ, सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित होती है। यह पाठ इन सभी गुणों को बच्चों के भीतर विकसित करने हेतु प्रासंगिक सिद्ध होगा।

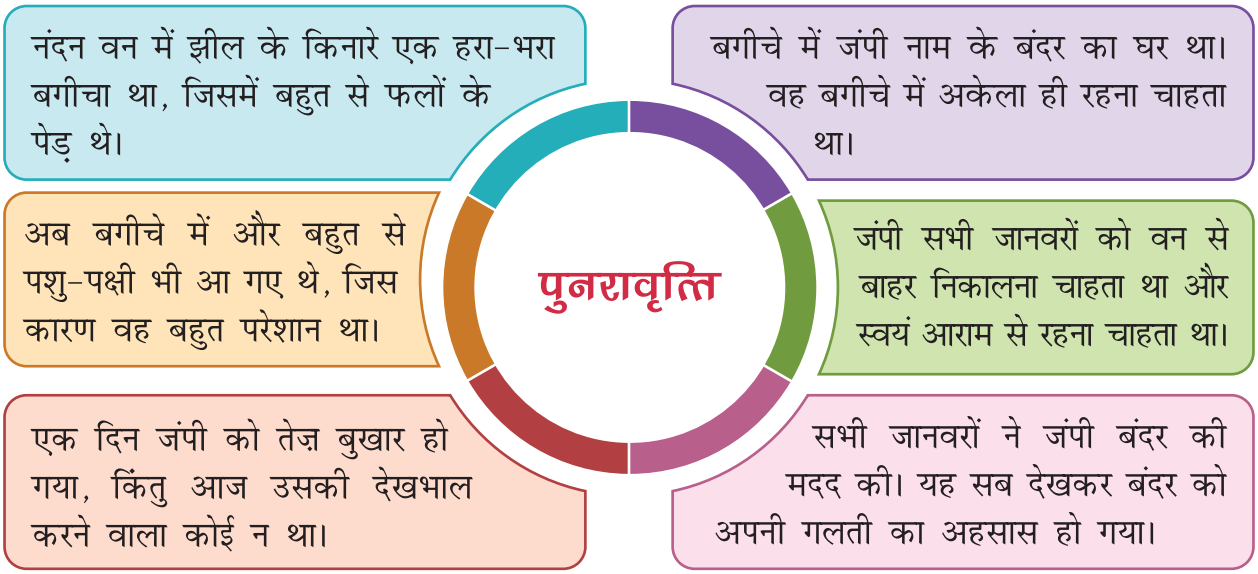

शब्दार्थ **स्वार्थी**– अपने स्वार्थ को पूरा करने की चाह रखने वाला

अभ्यास की ओर

सुनिए और बोलिए

Listening and Speaking Skills

भलाई, स्वार्थी, आँसू, इंजैक्शन, शर्मिंदा, बोरियत

बोलिए और बताइए

- नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए– Knolwedge

(क) क्या आपको कोई परेशान करता है? यदि हाँ, तो कौन?

(ख) बाकी जानवर तथा पक्षी जंपी को रोकने-टोकने क्यों लगे थे?

(ग) क्या आपको भी किसी काम के लिए रोका-टोका जाता है?

(घ) हमें मिल-जुलकर क्यों रहना चाहिए?

लिखिए और बताइए

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर के लिए उचित विकल्प चुनिए– Evaluation

(क) जंपी बंदर का स्वभाव कैसा था?

(i) शांत ☐ (ii) स्वार्थी ☐

(iii) दयालु ☐

(ख) कहानी के अंत में जंपी बंदर की आँखों से आँसू क्यों बहने लगे?

(i) क्योंकि उसका बुखार बढ़ गया था। ☐

(ii) क्योंकि उसे अपनी गलती का अहसास हो गया था। ☐

(iii) क्योंकि सभी जानवर फिर से उसे परेशान करने आ गए थे। ☐

2. सही (✓) या गलत (×) का निशान चुनकर लगाइए– Knowledge

(क) जंपी बंदर सभी जानवरों के साथ मिल-जुलकर रहता था। ☐

(ख) एक दिन जंपी को बहुत तेज़ बुखार हो गया। ☐

(ग) सभी जानवरों ने जंपी को जंगल से निकाल दिया। ☐

(घ) जंपी को साथ रहने का महत्व समझ आ गया। ☐

3. नीचे दिए गए वाक्यों को सही शब्द लिखकर पूरा कीजिए– Application

(क) जंपी का घर ..... में था। (जंगल/बगीचे)

(ख) जंपी को ..... पर बैठकर गाना सुनना पसंद था। (डाल/छत)

(ग) जंपी अपनी ..... से सभी को परेशान करने लगा। (शरारतों/बातों)

(घ) जंपी अपनी हरकतों पर बहुत ..... हुआ। (प्रसन्न/शर्मिंदा)

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– Understanding

(क) जंपी रात में क्या सुना करता था?

.....

(ख) जंपी से अधिक शहद किसे चाहिए था?

.....

(ग) हमें एक-दूसरे के साथ किस प्रकार रहना चाहिए?

.....

(घ) जंपी शर्मिंदा क्यों था?

.....

(ङ) यदि आप कहानी का अंत लिखते, तो क्या लिखते?

.....

समझिए और बताइए

- नीचे दिए गए पाठ के अंश से कोई दो प्रश्न बनाइए और अपने सहपाठियों से उन प्रश्नों के उत्तर पता कीजिए– Understanding & Collaboration

"अपने लिए जानवरों का प्यार देखकर जंपी की आँखों से आँसू बहने लगे। वह बोला, "मुझे माफ़ कर दो दोस्तो, मैं अपने किए पर बेहद शर्मिंदा हूँ। मैं स्वार्थी हो गया था आज मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि अकेले रहने में कोई सुख नहीं, सच्चा सुख तो एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने में है।"

(क) .....

(ख) .....

सोचिए और बताइए

Critical Thinking

- बेहोश होने के बाद जब जंपी को होश आता है तो वह सभी जानवरों तथा पक्षियों को अपने आस-पास उसकी देखभाल करते हुए पाता है। यदि समय पर कोई भी उसकी देखभाल के लिए न आता, तो क्या होता? सोचिए और बताइए।
- पाठ का शीर्षक 'झील के किनारे' है। क्या यह कहानी केवल झील तथा किनारों तक ही सीमित है? इसके लिए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए और यह भी बताइए कि यह पाठ हमें क्या सीख देता है?

भाषा और व्याकरण से

Analysis & Application

1. नंदन वन में झील के किनारे एक हरा-भरा बगीचा था।

दिए गए वाक्य में बताया गया है कि बगीचा हरा-भरा था।

नीचे दिए गए जानवरों तथा पक्षियों के चित्रों के आधार पर बताइए कि कौन, कैसा था/होगा? आप एक से अधिक शब्द भी लिख सकते हैं।

....

....